श्लोक – 39-53

श्लोक : 39, 40

1. समता के कारण कर्मबंध से मुक्त
2. समता के आरंभ का नाश नहीं होता
3. समता के लिए अनुष्ठान का विपरीत फल नहीं आता
4. समता के लिए अनुष्ठान से भय का नाश नहीं होता है।

∴ निष्काम भाव सत्य है क्यूँकि परमात्मा का स्वरुप है
सकाम भाव असत्य है क्यूँकि माया का स्वरुप है

श्लोक : 41

व्यवसायात्मिक बुद्धि ⟶ निष्काम बुद्धि

अव्यवसायात्मिक बुद्धि⟶ सकाम बुद्धि⟶ बहुशाखा मन

श्लोक : 42-44

अव्यवसायात्मिक बुद्धि के कारण —

1. भोगों में तन्मयता
2. फल की अपेक्षा से कर्म करते हैं
3. कामना छोड़ता भी है तो आगे पाने के लक्ष्य से
4. स्वर्ग से बढ़कर कुछ नहीं
5. भोगों व ऐश्वर्य में इतना आसवत

श्लोक : 45

इसमें 5 बातें कहीं हैं —

1. निस्त्रैगुण्य: भव - तीन गुणों से मुक्त हो, गुणातीत हो
2. नित्यसत्त्वस्थ: भव - नित्य वस्तु परमात्मा में स्थित हो
3. निर्द्वन्द्व: भव - राग-द्वेष, हर्ष-शोक, आदि द्विन्द्वो से मुक्त हो
4. निर्योगक्षेम भव - योग क्षेम चाहने वाला नहीं हो
5. आत्मावान् भव - आत्मा की अनुभूति वाला हो

श्लोक : 46

निर्द्वन्द्व होने का लाभ —

1. जो सीमा (शास्त्र) में मिलेगा, वह असीम (आत्मज्ञान) में मिलेगा ही।
2. सीमाओं (शास्त्र, संप्रदायों, मत के आग्रह) को पकड़ लिया तो असीम में न जी पाओगे।
3. जो असीम (आत्मज्ञान) तक पहुंच जाता है उसे शास्त्र व संप्रदाय अपनी कैद में नहीं रख सकते।

श्लोक – 39-53

श्लोक : 47

कर्मयोग के अनमोल 4 सूत्र —

1. कर्मणि एवं अधिकार: ते = कर्म करने में तू स्वतंत्र है
2. मा फलेषु कदाचन = कर्म फल भोगने में तू परतंत्र है
3. मा कर्मफल हेतुर्भु: = तू कर्म फल हेतु भी मत बन
4. मा ते संगोस्तु अकर्मणि = तेरा अकर्म (प्रमाद) में संग न हो

श्लोक : 48

- कर्म पूर्ण हो तो समभाव
- कर्म पूर्ण न हो तो समभाव
- कर्म फल की जो प्राप्ति हो उसमे समभाव

श्लोक : 49- 51

समबुद्धि का परिणाम —

1. योग : कर्मसु कौशलम् - समभाव के कारण, कर्मो में उत्तम कर्म 'योग' को साध लेता है।

कर्म करते हुए भी 'योग' में कुशल रहता है

2. अनामय - विकार रहित स्तिथि की प्राप्ति

श्लोक : 52, 53

अनामय पद की प्राप्ति का क्रम —

1. भोगो से वैराग्य
2. अचल पद की प्राप्ति